शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

डॉ. रांगेय राघव के जीवनीपरक उपन्यास 'यशोधरा जीत गई' का मूल्यांकन

डॉ. सुरेन्द्र कुमार, एसोसिएट प्रोफ़ेसर (हिन्दी)
राजकीय महाविद्यालय
भिवानी, हरियाणा, भारत

शोध संक्षेप

हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. रांगेय राघव ने अपने जीवनीपरक उपन्यासों के माध्यम से भारतीय इतिहास और संस्कृति के अनेक महत्वपूर्ण चरित्रों को नवीन दृष्टि से पुनर्सृजित किया है।'यशोधरा जीत गई' उनका जीवनीपरक उपन्यास, उपन्यास-परम्परा की एक उल्लेखनीय कृति है, जिसमें गौतम बुद्ध के जीवन के साथ-साथ यशोधरा के व्यक्तित्व को भी समान महत्व प्रदान किया गया है। यह उपन्यास बुद्ध के जीवन का पुनर्कथन मात्र नहीं है बल्कि नारी-अस्मिता, सामाजिक समता, मानवीय करुणा तथा ऐतिहासिक चेतना का सशक्त आख्यान है। रांगेय राघव ने इतिहास की प्रामाणिकता को सुरक्षित रखते हुए आधुनिक जीवनदृष्टि, नारी-स्वातन्त्र्य और मानवतावादी चिंतन का समन्वय किया है। प्रस्तुत शोधपत्र में उपन्यास का जीवनीपरक उपन्यास के रूप में मूल्यांकन करते हुए इतिहास और कल्पना के संतुलन, बुद्ध की पुनर्व्याख्या, यशोधरा की नारीवादी पुनर्स्थापना, समकालीन प्रासंगिकता, भाषा-शैली, शिल्प तथा हिन्दी के जीवनीपरक उपन्यास साहित्य में उनके योगदान का समालोचनात्मक विवेचन किया गया है।

मुख्य शब्द- *रांगेय राघव, यशोधरा जीत गई, जीवनीपरक उपन्यास, बुद्ध, यशोधरा, नारी-चेतना, ऐतिहासिकता, आधुनिकता।*

भूमिका

डॉ. रांगेय राघव हिन्दी साहित्य के उन विरल रचनाकारों में हैं जिन्होंने इतिहास, संस्कृति और साहित्य के त्रिवेणी-संगम से जीवनीपरक उपन्यास-विधा को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। उन्होंने ऐतिहासिक व्यक्तित्वों के जीवन को केवल घटनाओं के अनुक्रम के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उनके माध्यम से युगीन चेतना, सामाजिक अन्तर्विरोधों और मानवीय मूल्यों का गहन विश्लेषण किया। उनके जीवनीपरक उपन्यासों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनमें इतिहास का पुनर्कथन नहीं, बल्कि इतिहास का पुनर्पाठ दिखाई देता है। इसी दृष्टि से 'यशोधरा जीत गई' उनकी सर्वाधिक महत्वपूर्ण कृतियों में गिनी जाती है। यह उपन्यास गौतम बुद्ध के जीवन पर आधारित होते हुए भी उसकी केन्द्रस्थ नायिका यशोधरा है। रांगेय राघव ने बुद्ध के आध्यात्मिक उत्कर्ष की अपेक्षा यशोधरा के नैतिक, वैचारिक और मानवीय उत्कर्ष को अधिक महत्व दिया है। यही कारण है कि उपन्यास का शीर्षक भी बुद्ध की विजय का नहीं, बल्कि यशोधरा की नैतिक विजय का उद्घोष करता है। इस दृष्टि से यह उपन्यास हिन्दी साहित्य में नारी-अस्मिता के प्रारम्भिक और सशक्त आख्यानों में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है।

जीवनीपरक उपन्यास के रूप में 'यशोधरा जीत गई' की सफलता

जीवनीपरक उपन्यास का मूल उद्देश्य किसी ऐतिहासिक अथवा महत्वपूर्ण व्यक्तित्व के जीवन

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2026
पीअर रीव्यूड रेफ़्रीड रिसर्च जर्नल

को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करते हुए उसके व्यक्तित्व, विचारों और युगीन परिस्थितियों का सम्यक् उद्घाटन करना होता है। इसमें इतिहास की तथ्यपरकता तथा उपन्यास की कलात्मकता- दोनों का संतुलित समन्वय अपेक्षित होता है। इस कसौटी पर 'यशोधरा जीत गई' एक अत्यन्त सफल जीवनीपरक उपन्यास सिद्ध होता है। रांगेय राघव ने इस कृति की भूमिका में स्पष्ट किया है कि उन्होंने इतिहास के साथ किसी प्रकार का मनमाना व्यवहार नहीं किया। वे लिखते हैं- "मैंने प्रस्तुत औपन्यासिक जीवनी में पात्रों में नए पात्र नहीं लिए। ऐसे दास-दासियों के नाम मिल जाएँ तो बात नहीं, परन्तु बड़े पात्र सब ऐतिहासिक ही हैं।"1 यह कथन लेखक की इतिहास-निष्ठा का परिचायक है। उन्होंने कथानक को रोचक बनाने के लिए कृत्रिम घटनाओं या काल्पनिक नायकों का सहारा नहीं लिया, बल्कि उपलब्ध ऐतिहासिक स्रोतों के आधार पर ही कथा का विकास किया है।

यह उपन्यास बुद्ध के सम्पूर्ण जीवन का आख्यान नहीं है। स्वयं लेखक स्वीकार करते हैं- "बुद्ध का जीवन बहुत विशाल है। प्रस्तुत पुस्तक में बुद्ध का पूरा जीवन नहीं है। बहुत बाकी है। उस काल में तो लिखने योग्य बहुत कुछ है। यदि इसी प्रकार लिखा जाए तो बुद्ध का सम्पूर्ण जीवन लिखने के लिए ऐसे पाँच या छः ग्रंथ और लिखे जा सकते हैं।"**2** इस स्वीकारोक्ति से स्पष्ट है कि लेखक का उद्देश्य सम्पूर्ण जीवन-वृत्त प्रस्तुत करना नहीं, बल्कि बुद्ध के जीवन के उस निर्णायक पक्ष का चित्रण करना था, जिसने यशोधरा और भारतीय समाज दोनों को गहराई से प्रभावित किया।

जीवनीपरक उपन्यास की सफलता का दूसरा महत्वपूर्ण आधार उसके पात्रों की मनोवैज्ञानिक विश्वसनीयता होती है। इस दृष्टि से रांगेय राघव अत्यन्त सफल सिद्ध होते हैं। उन्होंने बुद्ध को चमत्कारों से मुक्त कर एक संवेदनशील मनुष्य के रूप में चित्रित किया है। उनकी दृष्टि में किसी भी महापुरुष की वास्तविक महानता उसके चमत्कारों में नहीं, बल्कि उसके मानवीय संघर्ष में निहित होती है। इसी कारण वे स्पष्ट लिखते हैं कि "बुद्ध को मैंने चमत्कारों से अलग करके देखा है। चमत्कार व्यक्ति की महानता को गिराते हैं।"**3** रांगेय राघव का यह दृष्टिकोण उन्हें पारम्परिक बौद्ध साहित्य से भिन्न बनाता है। वे बुद्ध के व्यक्तित्व का सम्प्रदायगत महिमामण्डन नहीं करते, बल्कि ऐतिहासिक और मानवीय धरातल पर उसका पुनर्मूल्यांकन करते हैं। यही उनकी जीवनीपरक दृष्टि की सबसे बड़ी विशेषता है।

उपन्यास का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि इसमें जीवनी और उपन्यास दोनों की आवश्यकताओं का संतुलित निर्वाह हुआ है। घटनाओं का चयन उद्देश्यपूर्ण है, संवाद पात्रानुकूल हैं तथा कथा का विकास क्रमबद्ध और स्वाभाविक है। बुद्ध के जीवन के साथ-साथ यशोधरा, शुद्धोधन, राहुल, महाप्रजापती गौतमी और बिम्बिसार जैसे पात्र भी अपने-अपने ऐतिहासिक और मनोवैज्ञानिक स्वरूप में विकसित होते हैं। इस प्रकार उपन्यास किसी एक पात्र की जीवनी न रहकर सम्पूर्ण युग की जीवन-गाथा बन जाता है।

इतिहास और कल्पना का संतुलन

किसी भी जीवनीपरक उपन्यास की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें इतिहास और कल्पना का समन्वय किस सीमा तक किया गया है। इतिहास केवल तथ्य प्रदान करता है, जबकि उपन्यास उन तथ्यों में जीवन, संवेदना और

शब्द–ब्रह्म E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अगस्त 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कलात्मकता का संचार करता है। यदि कल्पना अधिक हो जाए तो इतिहास की विश्वसनीयता नष्ट हो जाती है और यदि इतिहास का बोझ अधिक हो तो रचना शुष्क वृत्तान्त बनकर रह जाती है। 'यशोधरा जीत गई' की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि रांगेय राघव ने इन दोनों के मध्य अत्यन्त संतुलित दृष्टि अपनाई है। लेखक ने अपनी ऐतिहासिक दृष्टि को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि "अभी तक बुद्ध पर लिखने वालों का दृष्टिकोण साम्प्रदायिक रहा है। मैंने अपना ऐतिहासिक दृष्टिकोण रखा है। प्राचीन भारत में साम्प्रदायिक आँखों ने जानबूझकर एक दूसरे के बारे में नहीं देखा। इसलिए भारतीय इतिहास को जानने के लिए हर सम्प्रदाय को देखना आवश्यक है। यही कारण है कि यहाँ गौतम बुद्ध केवल त्रिपिटकों की बात नहीं करता, वह इतिहास, वेद, पुराण आदि की भी बात करता है।"**4** रांगेय राघव ने केवल बौद्ध ग्रन्थों पर निर्भर रहने के स्थान पर भारतीय परम्परा के विविध स्रोतों का तुलनात्मक अध्ययन किया और उसके आधार पर बुद्ध का अधिक संतुलित एवं व्यापक व्यक्तित्व प्रस्तुत किया।

इतिहास और कल्पना के संतुलन का सबसे उत्कृष्ट उदाहरण यशोधरा के चरित्र में दिखाई देता है। इतिहास यशोधरा के जीवन के बारे में सीमित जानकारी देता है, किन्तु रांगेय राघव ने उन्हीं सीमित तथ्यों के आधार पर उसके अन्तर्मन, उसके स्वाभिमान, उसके वैचारिक संघर्ष तथा उसकी मानसिक पीड़ा का अत्यन्त कलात्मक और विश्वसनीय चित्रण किया है। यहाँ कल्पना इतिहास का अतिक्रमण नहीं करती, बल्कि इतिहास की रिक्तियों को भरने का कार्य करती है। उपन्यास में आधुनिक चेतना का समावेश भी इसी सन्तुलित दृष्टि का परिणाम है। लेखक आधुनिक नारी-विमर्श को प्रत्यक्षतः बुद्धकाल पर आरोपित नहीं करते, बल्कि यशोधरा के माध्यम से उसे ऐतिहासिक परिस्थितियों के अनुरूप अभिव्यक्ति देते हैं। इस प्रकार रांगेय राघव ने इतिहास को आधुनिकता का माध्यम बनाया है, आधुनिकता को इतिहास पर आरोपित नहीं किया। यही कारण है कि उपन्यास की ऐतिहासिक विश्वसनीयता अक्षुण्ण बनी रहती है और साथ ही वह समकालीन जीवन के लिए भी अर्थपूर्ण बन जाता है।

बुद्ध की पुनर्व्याख्या

डॉ. रांगेय राघव की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उन्होंने गौतम बुद्ध की छवि को पारम्परिक धार्मिक आख्यानों की सीमाओं से मुक्त कर एक ऐतिहासिक, मानवीय और वैचारिक व्यक्तित्व के रूप में पुनः प्रतिष्ठित किया है। बौद्ध साहित्य और लोकमानस में बुद्ध का स्वरूप प्रायः चमत्कारों, अलौकिक घटनाओं तथा देवत्व से आच्छादित दिखाई देता है, जबकि रांगेय राघव इस प्रवृत्ति का प्रतिरोध करते हैं। उनकी दृष्टि में किसी महापुरुष की महानता उसके चमत्कारों में नहीं, बल्कि उसके संघर्ष, संवेदना और मानवीय उपलब्धियों में निहित होती है। रांगेय राघव बुद्ध के व्यक्तित्व का मूल्यांकन किसी सम्प्रदाय विशेष की दृष्टि से नहीं करते। वे उन्हें भारतीय सांस्कृतिक परम्परा के व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखते हैं। उनकी दृष्टि में बुद्ध न केवल बौद्ध धर्म के प्रवर्तक हैं, बल्कि भारतीय चिंतन-परम्परा के ऐसे महापुरुष हैं जिन्होंने सामाजिक समता, नैतिकता और मानवीय करुणा को नया आयाम प्रदान किया। उपन्यास में बुद्ध किसी अलौकिक सत्ता के प्रतिनिधि नहीं, बल्कि समाज की विषमता, जातिगत भेदभाव, दास-प्रथा और मानवीय पीड़ा से व्यथित संवेदनशील मनुष्य के रूप में सामने

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 अगस्त 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आते हैं। वे राजकुमार होकर भी दासों के दुःख से विचलित होते हैं और प्रश्न करते हैं कि "क्या दास मनुष्य नहीं होता ?" यह प्रश्न केवल तत्कालीन समाज-व्यवस्था पर ही नहीं, बल्कि समस्त मानव इतिहास में व्याप्त सामाजिक असमानता पर भी प्रश्नचिह्न है। बुद्ध का चिंतन इसी मानवीय संवेदना से विकसित होता है।

रांगेय राघव ने बुद्ध को एक निरन्तर संघर्षरत व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया है। गृहत्याग का निर्णय उनके लिए सहज नहीं है। वे पत्नी, पुत्र और परिवार के प्रति गहरे अनुराग से जुड़े हुए हैं। भद्रा (यशोधरा) से उनका मानसिक लगाव उन्हें बार-बार विचलित करता है। उपन्यास में उनका अन्तर्द्वन्द्व अत्यन्त मार्मिक रूप में व्यक्त हुआ है- "भद्रा के बिना जीवन होगा ही क्या ? वहाँ भद्रा नहीं होगी ! वहाँ भद्रा नहीं होगी !! नहीं, नहीं भद्रा चाहिए, भद्रा होनी चाहिए। भद्रा के बिना काम चलेगा ?"**5** यह प्रसंग सिद्ध करता है कि बुद्ध की महानता भावनाशून्यता में नहीं, बल्कि भावनाओं पर विजय प्राप्त करने में है। इसी कारण उनका त्याग अधिक विश्वसनीय और मानवीय बन जाता है। ज्ञान प्राप्ति के बाद भी बुद्ध किसी धार्मिक कट्टरता का प्रचार नहीं करते, बल्कि मनुष्य को कर्म, करुणा और नैतिक जीवन का संदेश देते हैं। वे जन्माधारित श्रेष्ठता का विरोध करते हुए कर्मप्रधान जीवन-दृष्टि का प्रतिपादन करते हैं। उनके अनुसार-"जो पाप, अभिमान, मन से हीन हो, वेदान्त पारंग ब्रह्मचारी हो, जिसके समान दूसरा न हो, वही ब्राह्मण है।"**6** इस प्रकार रांगेय राघव बुद्ध को सामाजिक क्रान्ति और नैतिक पुनर्जागरण के अग्रदूत के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वस्तुतः उपन्यास में बुद्ध की पुनर्व्याख्या धार्मिक आस्था की अपेक्षा मानवीय मूल्यों के आधार पर हुई है। यही कारण है कि उनका व्यक्तित्व किसी सम्प्रदाय की सीमा में बँधकर नहीं रह जाता, बल्कि सार्वभौमिक मानवीय चेतना का प्रतीक बन जाता है।

यशोधरा की नारीवादी पुनर्स्थापना

'यशोधरा जीत गई' की सर्वाधिक मौलिक उपलब्धि यशोधरा के चरित्र का पुनर्सृजन है। भारतीय साहित्य में यशोधरा प्रायः विरहिणी, त्यागमयी और पतिव्रता नारी के रूप में चित्रित होती रही है, किन्तु रांगेय राघव ने उसे आत्मसम्मान, बौद्धिक स्वतंत्रता और स्त्री-अस्मिता की प्रतिनिधि के रूप में प्रतिष्ठित किया है। यही कारण है कि उपन्यास का शीर्षक बुद्ध की नहीं, बल्कि यशोधरा की नैतिक विजय का उद्घोष करता है। लेखक स्वयं स्वीकार करते हैं कि उन्होंने यशोधरा को आधुनिक नारीवाद के प्रत्यक्ष प्रभाव में नहीं गढ़ा, बल्कि इतिहास की सम्भावनाओं के भीतर उसके व्यक्तित्व का विकास किया है। वे लिखते हैं- "यशोधरा आधुनिक चिंतन की बात नहीं करती परन्तु वही कहती है जो नारी तब भी कह सकती थी।"**7** इससे स्पष्ट है कि यशोधरा की वैचारिक मुखरता लेखक की ऐतिहासिक कल्पना का परिणाम है, न कि कृत्रिम आरोपण।

उपन्यास की यशोधरा पुरुष की अधीनता स्वीकार करने वाली स्त्री नहीं है। वह स्त्री और पुरुष को जीवन के समान भागीदार मानती है। उसके शब्दों में- "मैं आज तक यह समझ नहीं पाई कि जब जीवन में हम दोनों मिलकर ही पूर्ण बनते हैं तो परस्पर यह द्वन्द्व क्यों आता है?"**8** उनका यह कथन आधुनिक स्त्री-विमर्श के मूल सिद्धान्त 'सहभागिता और समानता' को उद्घाटित करता है। यशोधरा पुरुष के अहंकार और उसके एकाधिकारवादी दृष्टिकोण पर तीखा प्रहार करती

है। वह कहती है- "अर्द्धांगिनी है वह! करुणा नहीं, दया नहीं, भीख नहीं। वह जीवन की समान अधिकारिणी है।"**9** यह संवाद केवल यशोधरा का नहीं, बल्कि सम्पूर्ण नारी जाति के आत्मसम्मान की घोषणा है। रांगेय राघव ने पहली बार यशोधरा को करुणा की प्रतीक के स्थान पर विचार और प्रतिरोध की प्रतीक बनाया है। सिद्धार्थ के गृहत्याग को भी यशोधरा महिमामण्डित नहीं करती। वह उसे पुरुष की निर्बलता के रूप में देखती है। उसका यह कहना कि "वह गए नहीं, छोड़कर नहीं गए, वे तो मेरे सामने से डर कर चले गए, उन्हें अपने पौरुष पर इतना भी विश्वास नहीं था।"**10** हिन्दी उपन्यास साहित्य में स्त्री की सबसे निर्भीक प्रतिक्रियाओं में से एक है। यहाँ पत्नी पति का अन्धानुकरण नहीं करती, बल्कि उसके निर्णय की नैतिक समीक्षा करती है। इस संदर्भ में डॉ. सत्यपाल चुघ का कथन उल्लेखनीय है- "यशोधरा जीत गई' की अभिधा स्वयं अपने अभिप्राय को मुखरित कर रही है। यह मैथिलीशरण गुप्त के 'यशोधरा' काव्य से प्रेरित है और इसमें आधुनिक नारी चेतना का शंखनाद है।.... उसके चुनौतीपूर्ण तर्क पुरुष के मिथ्या अहंकार का भण्डाफोड़ करने में भी समर्थ है और नारी की गरिमा दिखाने में भी सशक्त।"**11**

रांगेय राघव ने यशोधरा को विद्रोहिणी बनाकर भी उसकी भारतीय सांस्कृतिक गरिमा को अक्षुण्ण रखा है। वह पति से विमुख नहीं होती, किन्तु आत्मसम्मान का भी परित्याग नहीं करती। वह न पीहर जाती है, न बुद्ध के समक्ष स्वयं उपस्थित होती है। जब बुद्ध उसके द्वार पर आते हैं, तभी उसका स्वाभिमान पूर्ण अर्थों में विजयी होता है। इसी प्रसंग का चित्रण करते हुए लेखक लिखते हैं- "श्रमण गौतम जाकर बैठ गए..... द्वार पर मुसकराती हुई विजयिनी.... बुद्ध ने देखा। वह प्रसन्न लगती थी। वह अपराजित थी।"**12** यही कारण है कि उपन्यास का शीर्षक 'यशोधरा जीत गई' अत्यन्त सार्थक सिद्ध होता है। यहाँ जीत किसी व्यक्ति की पराजय नहीं, बल्कि स्त्री के आत्मसम्मान, धैर्य और नैतिक शक्ति की विजय है। इस दृष्टि से यह उपन्यास हिन्दी साहित्य में नारी-अस्मिता का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज बन जाता है।

उपन्यास की समकालीन प्रासंगिकता

यद्यपि 'यशोधरा जीत गई' का कथानक बुद्धकालीन इतिहास पर आधारित है, तथापि इसकी समस्याएँ और जीवन-दृष्टि आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं। रांगेय राघव ने अतीत का सहारा लेकर वर्तमान की सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक चुनौतियों पर विचार किया है। इसीलिए यह उपन्यास केवल ऐतिहासिक आख्यान न होकर समकालीन समाज का भी दर्पण बन जाता है।

उपन्यास की सबसे बड़ी समकालीन उपलब्धि स्त्री-अस्मिता की स्थापना है। आज जब लैंगिक समानता, स्त्री-अधिकार और आत्मनिर्णय के प्रश्न वैश्विक विमर्श के केन्द्र में हैं, तब यशोधरा का व्यक्तित्व और अधिक प्रासंगिक हो उठता है। वह पुरुष-विरोध का नहीं, बल्कि समानता और साझेदारी का पक्ष लेती है। उसका संघर्ष आज भी स्त्री-मुक्ति की स्वस्थ और संतुलित अवधारणा का प्रतिनिधित्व करता है। इसीलिए समीक्षकों ने भी स्वीकार किया है कि "तथापि विद्रोहिणी यशोधरा के वचनों की प्रखरता काल-सीमाओं का अतिक्रमण कर आधुनिकता की प्रतीति ही अधिक कराती है।"**13**

इसी प्रकार बुद्ध का करुणा, समता और अहिंसा पर आधारित चिंतन भी वर्तमान समय में

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जातीय विद्वेष, धार्मिक कट्टरता, हिंसा, युद्ध, आर्थिक विषमता और नैतिक संकट से जूझते विश्व में बुद्ध का मानवतावादी दर्शन शान्ति और सह-अस्तित्व का प्रभावी मार्ग प्रस्तुत करता है। रांगेय राघव ने बुद्ध को धर्माचार्य के रूप में नहीं, बल्कि ऐसे मानवतावादी चिंतक के रूप में चित्रित किया है, जिनकी प्रासंगिकता कालातीत है।

उपन्यास की एक अन्य समकालीन विशेषता इसका तर्कशील दृष्टिकोण है। लेखक अन्धविश्वास, रूढ़ियों और सम्प्रदायगत संकीर्णता का समर्थन नहीं करते। वे इतिहास का विवेकपूर्ण पुनर्पाठ करते हैं और पाठक को आलोचनात्मक दृष्टि विकसित करने की प्रेरणा देते हैं। यही कारण है कि यह कृति आज भी शोध और आलोचना के क्षेत्र में समान रूप से महत्वपूर्ण बनी हुई है।

रांगेय राघव इतिहास के माध्यम से यह सिद्ध करते हैं कि सामाजिक परिवर्तन किसी चमत्कार से नहीं, बल्कि विचार, संघर्ष और नैतिक साहस से सम्भव होता है। बुद्ध और यशोधरा दोनों अपने-अपने स्तर पर इसी परिवर्तन के वाहक हैं। एक मानवता को नई दिशा देता है, तो दूसरी नारी-अस्मिता को नया आत्मविश्वास प्रदान करती है। यही इस उपन्यास की शाश्वत प्रासंगिकता है।

भाषा, शैली एवं शिल्प

डॉ. रांगेय राघव की रचनाशैली का सबसे महत्वपूर्ण गुण उसकी विषयानुकूलता है। 'यशोधरा जीत गई' में उन्होंने बुद्धकालीन परिवेश के अनुरूप संस्कृतनिष्ठ, साहित्यिक तथा गरिमामयी भाषा का प्रयोग किया है। भाषा में कहीं भी अनावश्यक आलंकारिकता अथवा कृत्रिमता नहीं है। जहाँ ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन है वहाँ भाषा संयत, वर्णनात्मक और तथ्यप्रधान है, वहीं पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व तथा भावनात्मक प्रसंगों में वही भाषा अत्यन्त मार्मिक, संवेदनशील और काव्यात्मक बन जाती है। इस प्रकार भाषा कथानक और पात्रों के साथ निरन्तर अपना स्वरूप बदलती रहती है।

उपन्यास की संवाद-योजना इसकी एक महत्वपूर्ण विशेषता है। संवाद केवल कथावस्तु को आगे नहीं बढ़ाते, बल्कि पात्रों के व्यक्तित्व, उनके वैचारिक संघर्ष तथा लेखक की जीवन-दृष्टि को भी उद्घाटित करते हैं। विशेषतः बुद्ध और यशोधरा के मध्य होने वाले संवाद उपन्यास की वैचारिक धुरी हैं। इन्हीं संवादों के माध्यम से नारी-स्वातन्त्र्य, मानवीय समानता, त्याग, कर्म, करुणा तथा सामाजिक विषमता जैसे प्रश्नों पर गंभीर विमर्श विकसित होता है। संवादों में नाटकीयता होने पर भी वे पात्रों की परिस्थितियों के अनुकूल हैं, जिससे उनकी विश्वसनीयता बनी रहती है।

शैली की दृष्टि से यह उपन्यास वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, मनोवैज्ञानिक और संवादात्मक शैली का संतुलित समन्वय प्रस्तुत करता है। घटनाओं का बाह्य चित्रण अपेक्षाकृत संक्षिप्त है, जबकि पात्रों के अन्तर्मन, उनकी मनःस्थितियों और वैचारिक द्वन्द्वों का विश्लेषण अधिक गहन है। इसी कारण यह कृति बाह्य घटनाओं की अपेक्षा आन्तरिक संघर्षों का उपन्यास अधिक प्रतीत होती है। बुद्ध के अन्तर्द्वन्द्व, यशोधरा के आत्मसम्मान, शुद्धोधन की पुत्र-वेदना तथा राहुल की मनःस्थिति का चित्रण लेखक की मनोवैज्ञानिक दक्षता का परिचायक है।

रचना-शिल्प की दृष्टि से भी 'यशोधरा जीत गई' अत्यन्त सुसंगठित उपन्यास है। इसकी संरचना प्रथमा, मध्यमा और उत्तरा नामक तीन खण्डों

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

में विभाजित है। यह विभाजन केवल औपचारिक नहीं है, बल्कि कथानक के क्रमिक विकास को भी सुनिश्चित करता है। 'प्रथमा' में सिद्धार्थ के वैराग्य की भूमिका निर्मित होती है, 'मध्यमा' में उनके संघर्ष और ज्ञान-प्राप्ति की प्रक्रिया चित्रित होती है तथा 'उत्तरा' में यशोधरा के व्यक्तित्व का उत्कर्ष और नैतिक विजय सामने आती है। इस प्रकार सम्पूर्ण शिल्प उपन्यास के शीर्षक और उसके केन्द्रीय उद्देश्य को क्रमशः विकसित करता है।

उपन्यास में प्रतीकात्मकता का भी प्रभावशाली प्रयोग हुआ है। बुद्ध केवल एक ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं रह जाते, बल्कि करुणा और मानवता के प्रतीक बन जाते हैं; वहीं यशोधरा सम्पूर्ण नारी जाति के आत्मसम्मान और संघर्ष का प्रतीक रूप धारण कर लेती है। शीर्षक 'यशोधरा जीत गई' स्वयं एक प्रतीक है, जो किसी व्यक्ति-विशेष की विजय नहीं, बल्कि नारी-अस्मिता की नैतिक विजय का द्योतक है। शीर्षक की सार्थकता पर विचार करते हुए डॉ सत्यपाल चुघ का मत विशेष रूप से उल्लेखनीय है- "शीर्षक 'यशोधरा जीत गई' है क्योंकि वह अपनी टेक नहीं छोड़ती किन्तु उपन्यास के अन्त में यशोधरा मूर्छित हो पड़ी हुई प्रदर्शित की गई है जो स्वाभाविक है और गुप्त जी के 'यशोधरा' काव्य से कहीं अधिक यथार्थ भी। गुप्त जी की यशोधरा अपने सभी तर्कों और टेक को भूलकर स्वेच्छा से 'राहुल बुद्धम् शरणम् कर उससे अयथार्थ सारी यशोधरा रचना की मूल हार्द के विरूद्ध समझौता कर लेती है किन्तु यहाँ इसकी मूर्छित अवस्था नारी पीड़ा को उभारने वाला प्रश्न चिह्न छोड़ने में ही अपनी कृतकार्यता अनुभव करती है।"**14** इस प्रकार भाषा, शैली और शिल्प- तीनों स्तरों पर यह कृति रांगेय राघव की परिपक्व औपन्यासिक प्रतिभा का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है।

सीमाएँ और उपलब्धियाँ

प्रत्येक महान कृति की भाँति 'यशोधरा जीत गई' भी अपनी अनेक उपलब्धियों के साथ कुछ सीमाओं को समेटे हुए है। इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि इतिहास, मनोविज्ञान और आधुनिक जीवन-दृष्टि का संतुलित समन्वय है। उपन्यास में बुद्ध के मानवीय व्यक्तित्व तथा यशोधरा के आत्मसम्मानपूर्ण चरित्र का जो पुनर्सृजन हुआ है वह हिन्दी साहित्य की अमूल्य उपलब्धि है। साथ ही, भाषा की गरिमा, संवादों की प्रभावशीलता, कथानक का संगठन और ऐतिहासिक परिवेश का सजीव चित्रण इसकी कलात्मक सफलता को और अधिक सुदृढ़ बनाते हैं। "गुप्तजी ने 'यशोधरा' नामक चम्पू काव्य के द्वारा जिस प्रकार यशोधरा के पात्र को गौरवान्वित किया था, इसी प्रकार रांगेय राघव ने भी इस उपन्यास में यशोधरा के चरित्र को सर्वोत्कृष्ट बना दिया है। यही इस शुद्ध जीवनीपरक उपन्यास का सफलतम पहलू है।"**15**

किन्तु आलोचनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो कुछ सीमाएँ भी दृष्टिगोचर होती हैं। अनेक आलोचकों का मत है कि यशोधरा के कुछ संवादों में आधुनिक नारीवादी चेतना का स्वर बुद्धकालीन परिस्थितियों की अपेक्षा अधिक मुखर प्रतीत होता है। स्वयं लेखक भी इस सम्भावना से परिचित हैं। इससे स्पष्ट है कि लेखक ने इतिहास की सीमाओं के भीतर रहते हुए आधुनिक चेतना को अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया है। इसी प्रकार कुछ स्थानों पर वैचारिक विमर्श की प्रधानता के कारण कथानक की गति अपेक्षाकृत धीमी हो जाती है। बुद्ध और यशोधरा के संवाद कई बार दार्शनिक बहस का रूप ग्रहण

कर लेते हैं। तथापि यह उपन्यास की सीमा कम और उसकी वैचारिक विशेषता अधिक प्रतीत होती है, क्योंकि रचना का उद्देश्य केवल कथा कहना नहीं, बल्कि इतिहास और वर्तमान के बीच संवाद स्थापित करना भी है।

अतः इन सीमाओं के बावजूद उपन्यास की उपलब्धियाँ कहीं अधिक महत्वपूर्ण और स्थायी हैं। इसकी साहित्यिक गरिमा, ऐतिहासिक दृष्टि, नारी-चेतना तथा मानवीय मूल्य इसे हिन्दी के श्रेष्ठ जीवनीपरक उपन्यासों की श्रेणी में प्रतिष्ठित करते हैं।

निष्कर्ष

डॉ. रांगेय राघव का 'यशोधरा जीत गई' हिन्दी जीवनीपरक उपन्यास-साहित्य की एक विशिष्ट उपलब्धि है। इसमें इतिहास, साहित्य, संस्कृति, दर्शन और आधुनिक चेतना का अत्यन्त सफल समन्वय हुआ है। लेखक ने गौतम बुद्ध के जीवन का पुनराख्यान करते हुए उन्हें चमत्कारों से मुक्त एक संघर्षशील, संवेदनशील और मानवतावादी व्यक्तित्व के रूप में प्रतिष्ठित किया है। साथ ही, यशोधरा के चरित्र को नई वैचारिक गरिमा प्रदान कर उसे भारतीय नारी-अस्मिता का प्रतीक बना दिया है। यह उपन्यास इतिहास का पुनर्लेखन नहीं, बल्कि उसका पुनर्पाठ है। इसमें इतिहास के माध्यम से वर्तमान की समस्याओं, जैसे- सामाजिक विषमता, नारी-अधिकार, जातिगत विभाजन, मानवीय गरिमा तथा नैतिक मूल्यों पर गंभीर विमर्श किया गया है। रांगेय राघव ने सिद्ध किया है कि अतीत तभी सार्थक होता है जब वह वर्तमान को आलोकित करे और भविष्य के लिए दिशा-निर्देश प्रदान करे। अतः कहा जा सकता है कि 'यशोधरा जीत गई' केवल बुद्ध और यशोधरा के जीवन का कलात्मक आख्यान नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक चेतना, मानवतावादी दर्शन और नारी-अस्मिता का एक महत्वपूर्ण साहित्यिक दस्तावेज़ है। इतिहास की प्रामाणिकता, औपन्यासिक शिल्प, वैचारिक गहनता तथा समकालीन प्रासंगिकता के कारण यह कृति हिन्दी के श्रेष्ठ जीवनीपरक उपन्यासों में अपना विशिष्ट स्थान सुरक्षित रखती है तथा डॉ. रांगेय राघव की रचनात्मक प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रमाण प्रस्तुत करती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. *रांगेय राघव की सम्पूर्ण औपन्यासिक जीवनियाँ यशोधरा जीत गई, (भूमिका) पृष्ठ 231*
2. *वही, (भूमिका) पृष्ठ 135*
3. *वही, (भूमिका) पृष्ठ 135*
4. *वही, (भूमिका) पृष्ठ 135*
5. *वही, पृष्ठ 115*
6. *वही, पृष्ठ 197*
7. *वही, (भूमिका) पृष्ठ 135*
8. *वही, पृष्ठ 161*
9. *वही, पृष्ठ 240*
10. *वही, पृष्ठ 215*
11. *ऐतिहासिक उपन्यास- डॉ. सत्यपाल चुघ, पृष्ठ 382-383*
12. *रांगेय राघव की सम्पूर्ण औपन्यासिक जीवनियाँ, यशोधरा जीत गई, पृष्ठ 232*
13. *ऐतिहासिक उपन्यास- डॉ. सत्यपाल चुघ, पृष्ठ 382*
14. *वही, पृष्ठ 383*
15. *हिन्दी के जीवनीपरक उपन्यास- डॉ. नवनीत आर. ठक्कर, पृष्ठ 111*